राजभाषा और संपर्क भाषा के रुप में हिन्दी का परिचय दीजिए।

3. आदिकाल की प्रवृत्तियों का विश्लेषण कीजिए। (12)

अथवा

द्विवेदीयुगीन साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

4. रैदास की कविता में भक्ति और ज्ञान के स्वरुप की विवेचन कीजिए। (12)

अथवा

भूषण का युद्ध वर्णन बड़ा ही सजीव और स्वाभाविक है, इस कथन के आधार पर भूषण की कविता विशेषताएं लिखिए।

5. जयशंकर प्रसाद की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना के स्वर को स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

'बेटी की विदाई' कविता का प्रतिपादय लिखिए।

6. निम्नलिखित में से **किन्हीं तीन** पर टिप्पणी लिखिए: (6×3=18)

(i) रीतिकालीन कविता

(ii) छायावाद

(iii) बिहारी

(iv) राष्ट्रभाषा

(v) नागार्जुन का साहित्यिक परिचय

(vi) समकालीन कविता



[This question paper contains 4 printed pages.]

25 JUL 2023

**Your Roll No.**

Maitreyi College ★ Chanakya Puri, New Delhi-110021 ★ LIBRARY

**Sr. No. of Question Paper : 2067**

Unique Paper Code : 2055201001

Name of the Paper : Hindi Bhasha Aur Sahitya (A)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi : GE**

Semester : II

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 90

**छात्रों के लिए निर्देश**

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

(क) दरसन दीजै राम, दरसन दीजै। दरसन दीजै विलंब न कीजै।।टेक।।
दरसन तोरा जीवन मोरा। बिन दरसन क्यों जीवे चकोरा।
साधो सतगुरू सब जग चेला। अबके बिछुरे मिलन दुहेला।।2।।
तन धन जोबन झूठी आसा। सत सत भाषै जन रैदासा।।

P.T.O.

munotes.in

अथवा

गरुड़ को दावा जैसे नाग के समूह पर दावा नागजूह पर
सिंहसिरताज को ।
दावा पुरहूत को पहारन के कुल पर दावा सबै पच्छिन के गोल
पर बाज को ।
भूषन अखंड नवखंड महिमंडल में तम पर दावा रबिकिरनसमाज
को ।
पूरब पछाँह देस दच्छिन तें उत्तर लौं जहाँ पातसाही तहाँ दावा
सिवराज को ।।

(ख) जोग - जुगति सिखए सबै मनौ महामुनि मैन ।
चाहत पिय अद्वैतता काननु सेवत नैन ।।
कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात ।
भरे भौन मैं करत हैं नैननु हीं सब बात ।।

अथवा

गोदी के बरसों को धीरे-धीरे भूल चली हो रानी,
बचपन की मधुरीली कूकों के प्रतिकूल चली हो रानी,
छोड़ जाह्नवी कूल, नेहधारा के कूल चली चली हो रानी,
मैंने झूला बाँधा है, अपने घर झूल चली हो रानी,



(ग) हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयं प्रभा समुज्जवला स्वतंत्रता पुकारती -
अमर्त्य वीरपुत्र हो दृढ़-प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ है - बढ़े चलो-बढ़े चलो !
असंख्य कीर्ति - रश्मियाँ विकीर्ण दिव्य दाह - सी !
सपूत मातृभूमि के रुको न शूर साहसी !
अराति सैन्य सिंधु में - सुबाड़वाग्नि से जलो !
प्रवीर हो जय बनो - बढ़े चलो बढ़े चलो!

अथवा

ऋतु बसन्त का सुप्रभात था
मन्द मन्द था अनिल बह रहा
बालारुण का मृदु किरणें थीं
अगल-बगल स्वणी शिखर थे
एक-दूसरे से विरहित हो
अलग-अलग रहकर ही जिनको
सारी रात बितानी होती (8×3=24)

2. हिंदी भाषा के उद्भव एवं विकास पर प्रकाश डालिए । (12)

अथवा



munotes.in